International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 30-05-2019; Accepted: 01-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 01-03

छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में रामकथा का स्वरूप

योगेश कुमार साहू
शोधार्थी (हिन्दी) पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का क्षेत्र बहुत व्यापक है, इसमें एक ओर मुक्तक–षैली के सदाबहार ददरिया–गीत मिलते हैं, तो दूसरी ओर प्रबंध–गीतों के अंतर्गत गोपल्ला गीत, रायसिंह का पवारा तथा राजा वीरसिंह के काहनी जैसे लंबे कथात्मक गीत भी मिलते हैं, जिसमें पराक्रम और विजय का अद्‌भुत वर्णन है।

वार्तालाप–षैली का निर्वाह ददरिया–गीतों में बखूबी मिलते हैं। विवाह–गीतों में पुनरावृत्ति–षैली के दर्षन सहज ही किए जा सकते हैं। लोक– साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंष लोकगीतों के रूप में प्राप्त होता है।

कृश्णदेव उपाध्याय– ''लोक साहित्य में लोकगीतों की ही प्रधानता है। सच तो यह है ये इसकी आत्मा है।''[1] लोकगीत लोक–साहित्य का ही गीत एक प्रधान अंग है, जिसका उद्‌भव नगर और ग्रम के संयुक्त साधारण–जन के मध्य होता है।

वृहत हिंदी कोष के अनुसार– ''लोकगीत का अर्थ है साधारण जनता में प्रचलित गीत।''[2] लोकगीत हमारे ऐहिक जीवन के पल–पल के साथी हैं। लोकगीतों की वस्तुएँ हैं।

महात्मा गाँधी– ''ये गीत जनता का साहित्य है, सच पूछो तो लोकगीत ही जनता की भाशा है।''[3]

लोकगीत हमारे जीवन के हर मार्मिक क्षण के, हमारे दुःख–सुख के प्रत्येक स्पंदन के साथी है। लोकगीत लोक–निसृत प्राकृतिक गान हैं, जिसमें लोक का उल्लास, उसकी पीड़ा, उसका ह्रदय एवं समस्त जीवन व्यक्त हुआ है। इन लोकगीतों का चित्र–फलक इंद्रधनुशी हैं, जो क्षितिज के एक छोर से उठता है और दूसरे छोर पर समाप्त होता है। वह अपने विज्ञान में बहुचित्र छिपाए रहता है, जिसके कोश में एक नहीं विभिन्न रंग हैं।

संपूर्णानंद– ''लोकगीत केवल व्यक्तियों के सुख–दुःख की गाथा नहीं गाते, लोकोल्लास ओर लोकोल्लाप का भी अभिव्यंजन करते हैं।''[4] लोकगीत एक गीत है अथवा स्वर–माधुर्य से युक्त एक गेय काव्य है, जो कि अषिक्षित जन–समुदाय के बीच अतीत के अनजाने ही उत्पन्न हो जाता है।

एनसायकलोपीडिया ब्रिटेनिका– ''आदिम स्फूर्त संगीत को ही लोकगीत की संज्ञा प्राप्त हुई है।''[5]

लोकगीत के संबंध में यह कहा जा सकता है कि लोकगीत स्वर–माधुर्य से युक्त, एक अधर से दूसरे अधर पर थिरकने वाली लोक–ह्रदय की वह सहज अभिव्यक्ति है, जिसमें जीवन और संस्कृति की संपूर्ण व्याख्या परंपरा एवं इतिहास का हाथ पकड़ कर चलती है।

हिंदी साहित्य कोष– ''वह लोक का अपना गीत होता है, जो परंपरा में पड़ जाता है और परंपरा उसमें समय–समय पर अनुकूल परिवर्तन करती रहती है।''[6]

लोकगीतों के वर्ण्य–विशय अत्यधिक व्यापक और विस्तृत है। इनका विस्तार जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी संस्कारों, विषेश घटनाओं एवं अवसरों, ऋतु–परिवर्तनों, समस्त रसों और समस्त जातियों से प्राप्त होता है।

लोकगीतों में लोक का ह्रदय छलक आता है। अतः इसमें लोक–जीवन का जितना सहज एवं यथार्थ चित्रण मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। लोक–जीवन को यदि समीप से पढ़ना है तो लोकगीतों के खुले पृश्ठों से अधिक महत्वपूर्ण सामग्री अन्यत्र प्राप्त हो सकता है। किसी जाति के लोकगीत उसके विधान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

अतः इन्हीं लोकगीतों के आधार पर हम अपने विभिन्न कार्यक्रमों में इन गीतों के माध्यम से अपनी खुषियों में चार चाँद लाते हैं।

जन्मोत्सव में

उत्सवधर्मी छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में रामकथा गूँथे हुए हैं। यहाँ जन्म–संस्कार के समय आचारों का लंबा अनुश्ठान होता है, जिसे जन्म के गीत कहते हैं, जिनमें 'सोहर' प्रधान है। लोक की अयोध्या में राम का अवतार होते ही उनका अभिनंदन जिन भावभीने सवर में किया जाता है, वह जन्म संबंधी गीतों में देखते ही बनता है।

नवजात बालक या बालिका में राम एवं सीता को देखकर आनंदित माताएँ अपने जीवन के अभावों को भूलकर कौषल्या व सुनयना के समाज सुख पाती हैं। वे सामाजिक अवस्था के नेगियों को भरपूर दान–दक्षिणा से उपकृत करना चाहती हैं–

''राम जनम लिन्हें, भगवान जनम लिन्हें
चइत राम नवमी में राम जनत लिन्हें।
सुईन आवय नेरूवा छिनै
नेरूवा छिनऊनी देबो मन के मड़वनी
सखियाँ आवयँ सोहर गावयँ
सोहर गवउनी देबो मन के मड़वनी
चइत रामनवमी में राम जनम लिन्हें।''[7]

वैवाहिक अवसरों पर

विवाह सभी संस्कारों में महत्वपूर्ण है। इसमें दो आत्माओं के मिलन के साथ सृश्टि के विकास का बीज भी समाहित है। छत्तीसगढ़ी लोक–जीवन की अभिव्यक्ति विवाह–गीतों से स्पश्ट है। लोक में विवाह के अवसर पर वर–वधू विश्णु–लक्ष्मी, षिव–पार्वती, राधा–कृश्ण के रूप में पूजित होते हैं। लोक की यह विषेशता है कि वह ईष्वरत्व में मनुश्यत्व और मनुश्यत्व में ईष्वरत्व को प्रतिश्ठापित करता है। श्रीराम कथापरक विवाह–गीतों में लोक की अभिव्यक्ति देखिए–

''एक तेल चढ़ियो हो हरियर हरियर
मँड़वा मँ दुलरू तोर बदन कुम्हिलाय
राम लखन के ओ राम लेखन के
तेल ओ चढ़त हे दाई,
तेल ओ चढ़त हे।
कँहवा के दियना होवै अँजोर
राम लखन के दाई तेल ओ चढ़त हे
कौसिल्या के दियना मोर होवै अँजोर।''[8]

आँगन में मण्डप सजाकर कलष स्थापित करते हैं, इस अवसरपर गीत गाते हैं–

''सरई सौगोना के दाई मड़वा छवाई ले
वही सिरिस वही खाम
सीता ल बिहावय राजाराम
नदिया के तिर–तिर दाई
पड़की पोखना
कनकी न चुनो चुनो खाय
कि अय मोर दाई सीता ल
बिहावय राजाराम।''[9]

भोजली–गीतों में

लोक–पर्व भोजली के गीतों में पौराणिक, ऐतिहासिक प्रसंगों के साथ–साथ राम महतारी कौषल्या जी तथा श्री राम–सीता का भी पावन उल्लेख मिलता है, जैसे–

''देवी गंगा देवी गंगा लहर तुरंगा
हो लहर तुरंगा
हमरो देवी भोजली के भींजै आठो अंगा
अहो देवी गंगा.....।
कौसल्या माई के मइके म भोजली सरोबो
सियाराम के दरसन करके तोला परघाबो।
अहो देवी गंगा.....।''[10]

ददरिया–गीतों में

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की रानी ददरिया की गूँज में सामूहिक चेतन धारा की संगीत का स्वर सुनाई देता है। ददरिया का वर्ण्य–विशय मूलतः श्रृंगार है, फिर भी लोक–प्रेम के इस लोकगीत में रामकथा के पात्रों का सहज उल्लेख मिलता है। इसके अंतर्गत श्री राम वन–गमन, सीता–अन्वेशण तथा मुक्तिदाता के रूप में श्रीराम का स्मरण किया जाता है, जैसे–

''बोलो बोला मुनिरंजन हरि गुन गावे
रे चिरैया बोले।
पागा ल बाँधे पुरुत करक
राम सिरिया नहाले सुरूत करके।
कोन बन मं आमा कवन बन जाम
कोन बन के चिरैया बोलथे राजाराम
राम धरे धनही लखन धरे बान,
सीता माई के खोजन बर छुटे हे हनुमान।''[11]

रावत के दोहों पर

रावत–नाचा के दोहों में स्वाभाविकता, जीवन का यथार्थ, अनुभूत भावनाएँ प्रमुख विशय बनती हैं। पारिवारिक, सामाजिक जीवन के प्रसंग, हास्य–व्यंग्य, सुभाशित तथा रामकथा परक दोहे भी इस गीत–नृत्य में समाहित होते हैं–

''लीलकंठ कीरा भखै, मुखै बिराजे राम
करनी सो कैसे रहे दरसन सो है काम।
बन के करोवाँ, बन धवाई के छछान
साल्हेबन के सुअना, भजो राम के नाम।
राजा जनक के छोकरी, भर लावत हे नीर
एंड़ी माँजके मुख धोवय, निरखे बदन सरीर।
बेटा कारन दसरथ मरगे, बहिनी कारण कंस
सीता कारन रावन मरगे उहू हे निरबंस।
राम राज में दूध मिले, कृश्णराज में घी
अब के राज में चाय मिले, फूँक–फूँक के पी।''[12]

डंडा–गीतों में

छत्तीसगढ़ के पुरुश नृत्य–गीतों में डंडा प्रमुख है, जिसे यहाँ 'रास' कहा जाता है। इसके नृत्य–गीतों में रामायण के लोक–प्रचलित प्रसंग प्रमुख रूप से मिलते हैं। सीता अन्वेशण का एक प्रसंग द्रश्टव्य है–

''तरी हरी नाना मोरनाना रे भइया,
हरि नाना मोर नाना रे भाई।
राम लखन दुनो भैया मिल के,
जानकी खोजत चाले जाये हो लाल
बेंदरा भालू के दल बल साजे,
भुँई बेंदरा न समाय हो लाल
कटकत रहाय मोर बेंदरा भालू,
सागर के तीन मे जाय हो लाल।''[14]

फाग गीतों में

मस्ती एवं भक्ति के फाग लोकगीतों में सीता–अन्वेशण, लंका–दहन, अंगद–रावण–संवाद, राम–रावण–युद्ध आदि प्रसंगों में हनुमान, जाम्बवान आदि के पराक्रम–गान अधिक हुआ है। लंका में युद्ध–प्रसंग आदि का एक दृष्य देखिए, जिसमें राम–दल के वीरों की वीरता का बखान किया गया है–

''हाँ हाँ रे रावन छोड़ दे आसा लंका के
गढ़ लंका चढ़े राजा राम छोड़ दे आसा लंका के।
पहिले द्वारा अंगल ठाढ़े जेन सभा म रोपे पाँव, रावन''[15]

रामकथापरक एक फाग–गीत में राम–सीता के बीच फाग खेलने का प्रसंग आया है, जहाँ मौज–मस्ती नहीं मर्यादा है। यहाँ सीता–राम का समागम केवल एक साधारण नर–नारी का संगम नहीं है, वह धरती और आकाष का मिलन है तथा सौंदर्य औरसत्य का समांकन है–

''हाँ रे अवध मा राम खेलैं होरी।
भरत सत्रुहन मिल फगुवा गावैं लखन रहै रंग घोरी।।
अबीर गुलाल से रंग गई देहरयाँ निरख जनक किसोरी।
पुर बासी सब खुसी मनावँय स्यामल गौर लख गोरी।।''[16]

कर्मा गीतों में

रामकथापरक कर्मा नृत्य–गीतों में विरह–मिलन, जीवन की क्षणभंगुरता तथा भक्ति–भाव का चित्रण मार्मिकता से होता है। मनुश्य का जीवन नष्वर और क्षणभंगुर है। काल बली के सम्मुख बड़े–बड़े प्रतापी राजे–महाराजे, रंक पराजित हो जाते हैं। झूमर कर्मा के अंतर्गत जीवन के इस षाष्वत सत्य की सरस अभिव्यक्ति हुई है–

''हो हो होय चोला चार दिना के राम।
माटी मा मिल जाही चोला चार दिना के राम।
राजा करन दधीची जहसे बड़े–बड़े दानी
एक दिन आइस सबो चले गिर रावन जस अभिमानी चोला....
कोनो रहिस न कोनो रइहीं आही सबके पारी
काल कोनो ल छोड़े नाहीं राजा रंक भिखारी।
चोला चार दिना के राम, माटी मां मिल जाही.....''[17]

जंवारा गीतों में

मर्यादा पुरुशोत्तम श्रीराम और कौषल्या का छत्तीसगढ़ से गहरा जुड़ाव रहा है। यह भी अद्भुत संयोग है कि धर्म–मर्यादा और सात्विक षौर्य के प्रतीक षक्तिधर राम चैत्र और और क्वाँर नवरात्रों से जुड़े हुए हैं। वासंती नवरात्रों के अंतिम दिन रामनवमी

श्रीराम का जन्मदिन है और षारदीय नवरात्रों के एक दिन बाद रावण पर विजय का त्यौहार विजयदषमी षौर्य–पराक्रम से जुड़ा हुआ है। षाक्त परंपरा के लोक–अनुश्ठानिक पर्व जँवारा में श्रीरामकथापरक अनेक प्रसंगों का गान किया जाता है। श्रीराम के वन–गमन के उपरांत अयोध्या नगरी का एक–एक कारुणिक दृष्य इस जँवारा–गीत में देखा जा सकता है–

''सुन्ना होगे अजोध्या केकई कुमति उठाई हो माय।।
घर में रोवें माता कौसल्या, अँगना मँ भरते भाई
ठाढ़े दसरथ प्रान तजत हैं, केकई मन पछिताई।।''[18]

संदर्भ–सूची

1 उपाध्याय, कृश्णदेव. भोजपुरी लोक–साहित्य का अध्ययन; 14.
2 वृहद हिंदी कोष; 1978.
3 मुंषी, के.एम. गुजरात एंड इट्स लिटरेचर; प्रस्तावना.
4 मिश्र, रीधर. भोजपुरी लोकगीतों के विविध रूप; 3.
5 एलसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका; 447.
6 वर्मा, धीरेन्द्र एवं अन्य (संपा.). हिंदी साहित्य कोष; 688.
7 कुलदीप, जगदीष एवं यदु, मन्नूलाल (संपा.). राम और रामकाज; 243.
8 यादव, राजन. रामकथापरक छत्तीसगढ़ी लोकगीत और जीवन–मूल्य; 250.
9 वही; 250.
10 वही; 251.
11 वही; 2251.
12 वही; 251.
13 निर्मलकर, बलदाऊ प्रसाद एवं यदु, मन्नूलाल (संपा.). राम और रामकाज; 256.
14 यादव, राजन. रामकथापरक छत्तीसगढ़ी लोकगीत और जीवन–मूल्य; 252.
15 वही; 254.
16 वही; 254.
17 वही; 254.
18 वही; 255.
19 परिहार, राम (संपा.). रामवनगमन की साहित्यिक निश्ठित.